

जितने प्रेमी तेरे मैं सबको शीश झुकाऊँ लिरिक्स



जितने प्रेमी तेरे,
मैं सबको शीश झुकाऊँ,
किसी के अवगुण कभी न देखूँ,
गुण झोली में पाऊँ,
जितने प्रेमी तेरे,
मैं सबको शीश झुकाऊँ।

दिल में कोई मैं न रहे,
श्रद्धा-भक्ति बनी रहे,
सबकी इज्जत मान करूँ,
सबका मैं सम्मान करूँ,
नीच-ऊँच मैं देखूँ ना,
खरा या खोटा परखूँ ना,
वैर-विरोध मिटा के भगवन,
सब पे सदके जाऊँ,
जितने प्रेमी तेरे,
मैं सबको शीश झुकाऊँ।

निर्धन है या है धनवान,
सबमें तेरा रूप महान,
सबसे मीठा बोलूँ मैं,
ज्ञान तराजू तोलूँ मैं,
जिसके घट में वास तेरा,
बहन मेरी वो भाई मेरा,
सबको अपना समझूँ मैं,
सबसे प्रीत निभाऊँ,
जितने प्रेमी तेरे,
मैं सबको शीश झुकाऊँ।

हर गुरुमुख में तेरा वास,
भक्तों में तू करे निवास,
मनमत जब भरमा जाए,
गुरुमत यह समझा जाए,
सब सद्गुरु के प्यारे हैं,
सब आँखों के तारे हैं,
तेरी ऊँची शिक्षा से मैं,

समस्त भजनों के लिरिक्स और विडियो बिना इन्टरनेट के भी आपकी आवाज़ें मोबाइल में देखने के लिए गूगल प्ले स्टोर या एप्पल एप्प स्टोर से 'भजन डायरी एप्प' जरूर इनस्टॉल करें। वेबसाइट - <https://www.bhajandiary.com>



जितने प्रेमी तेरे,
मैं सबको शीश झुकाऊँ।bd।

जितने प्रेमी तेरे,
मैं सबको शीश झुकाऊँ,
किसी के अवगुण कभी न देखूँ,
गुण झोली में पाऊँ,
जितने प्रेमी तेरे,
मैं सबको शीश झुकाऊँ।bd।

प्रेषक – तपोभूमि परमहंस योगाश्रम धाम भिवानी।
